Dated 12/8/2020

B.A Part-1 (Hd Subsi) Philosophy

Dr0 अनीता कुमारी गुप्ता
जे० के० कॉलेज बिरौल

बौद्ध-दर्शन में निर्वाण की व्याख्या करें?

Ans. बौद्ध-दर्शन के प्रणेता के रूप में महात्मा बुद्ध का नाम लिया जाता है। इतिहासकारों के अनुसार भगवान बुद्ध का महाभिनिष्क्रमण से लेकर महापरिनिर्वाण तक का समय छठी सदी ई०पू० है। महात्मा बुद्ध ने लगभग अस्सी वर्ष की आयु में निर्वाण प्राप्त किया था। जैसा कि कहा जाता है कि जब भगवान बुद्ध से जीव, जगत आदि से संबंधीत प्रश्न किये जाते थे तो वे उसका उत्तर न देकर मौन रह जाते थे। इसका यह अर्थ नहीं कि वे इसका उत्तर नहीं जानते थे बल्कि वे स्थापनीय थे, व्याकरणीय नहीं।

बौद्ध-दर्शन के अनुयायी जीवन-मुक्ति और विदेह मुक्ति की तरह निर्वाण और परिनिर्वाण में भेद करते हैं। निर्वाण इसी जीवन में संभव है, जबकि परिनिर्वाण मृत्यु के उपरान्त प्राप्त होता है। निर्वाण का अर्थ जीवन का का अन्त नहीं है, अपितु यह एक ऐसी अवस्था है जो जीवनकाल में ही प्राप्त है। निर्वाण निष्क्रियता की अवस्था भी नहीं है। कुछ विद्वानों ने निर्वाण का शाब्दिक अर्थ 'बुझा हुआ' से लिया है तो कुछ विद्वानों ने निर्वाण का अर्थ 'शीतलता' भी लिया है। बौद्ध धर्म के हीनयान सम्प्रदाय में निर्वाण का अर्थ जीवन का अंत है। डॉ० राधाकृष्णन का मानना है कि निर्वाण का अर्थ शीतलता है जो वासना एवं दुःखरूपी आग को ठंडा कर देता है। अतः निर्वाण का अर्थ पुनर्जन्म रूपी पथ का अंत है जाना।

—X—